Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XIV, Issue No. 2, January-2018, ISSN 2230-7540

प्रताप सहगल रचित नाटक कोई अंत में दाम्पत्य संबंधों में विघटन

Jai Bhagwan[1]* Dr. Parveen Kumar[2]

[1] Research Scholar, PhD in Hindi, OPJS University, Churu, Rajasthan

[2] Assistant Professor, OPJS University, Churu, Rajasthan

सार – नाटककार आज इस सत्यता को बड़ी ईमानदारी से स्वीकार करने लगे हैं कि सामान्य जन की दयनीय स्थिति और त्रासद नियति के लिए जिम्मेदार ताकतों के बहुरूपी चेहरों को बेनकाब करना और जनता में आत्मविश्वास और आक्रोश पैदा करके अन्याय और शोषण की शक्तियों के विरुद्ध लड़ने के लिए तैयार करना आज के सही, प्रासंगिक, सार्थक नाटक का ऐतिहासिक उत्तरदायित्व है। हमारा आज का नाटक और रंगमंच अपनी इस महत्त्वपूर्ण भूमिका और बुनियादी जिम्मेदारी से कतरा कर आगे नहीं बढ़ सकता।

----------x----------

भारत की परिवर्तित स्थितियों का जो व्यापक और प्रभावकारी रूप हमारे सामने आया है वह हमें भारतीय परिवारों में विघटन के रूप में परिलक्षित होता है। आधुनिक युग विशृंखलता और बिखराहट का युग है।

"परिवार में अनेक सदस्य साथ रहते हैं। इन सबके बीच विचारों, आयु, जीवन मूल्यों और शिक्षा आदि अनेकानेक कारणों से संघर्ष उत्पन्न होता है। यह संघर्ष कभी-कभी यहाँ तक बढ़ जाता है कि इससे पारिवारिक विघटन हो जाता है। यह संघर्ष अनेक स्तरों पर होता है चाहे उच्च वर्ग हो या मध्य वर्ग या निम्न वर्ग, प्रत्येक वर्ग में संघर्ष दिखाई देता है।"1 वैवाहिक जीवन की रूढ़ मान्यताएं तथा परम्परागत बंधन अब शिथिल हो चुके हैं। नई सभ्यता से रंगे जनजीवन में पारिवारिक सदस्यों में अधिकार बोध की भावना बढ़ती जा रही है। यही कारण है कि परिवार टूटकर सीमित होते जा रहे हैं। अगर दम्पत्ति तलाक भी न ले तो वह साथ रहकर भी कोसों मील दूर है। इसी वैयक्तिक चेतना के धरातल पर जिंदगी की तलाश में आदमी भटक रहा है।

शम्भूरत्न त्रिपाठी पारिवारिक विघटन उस समय होता है, जब परिवार में पति-पत्नी अपने पारस्परिक उत्तरदायित्वों को सम्पन्न नहीं करते तथा बच्चों के पालन-पोषण का कार्य नहीं किया जाता है।2

आज के परिवेश में जहाँ पति-पत्नी के संबध खोखले हो गये हैं। पुरुष-स्त्री के स्वतन्त्र व्यक्तित्व को अपनी मानसिकता के स्तर पर नहीं स्वीकार कर सका है। पति-पत्नी के बीच उत्पन्न मानसिक द्वन्द्वों एवं गुत्थियों के कारण स्त्री के मानस में 'पति' और पुरुष के मानस में 'पत्नी' के सम्बन्ध जर्जर हो गये हैं- "दोनों के व्यक्तित्व पूर्वत्व की खोज में खंडित होते जा रहे हैं"3

नहीं कोई अंत नाटक में पारिवारिक विघटन का कारण कामतुष्टि के अभाव में दाम्पत्य जीवन की अस्वस्थता और टूटन के माध्यम से कामतुष्टिपरक मूल्यों की ममता और अनिवार्यता का अंकन किया है। दम्पत्ति की अनबन का कारण पुरुष स्त्री की असमानता का होना और शारीरिक अक्षमताजन्य यौन प्रवृत्ति का अभाव ही है, जो पति का अपनी आत्महीनता की प्रतिक्रिया स्वरूप पत्नी के प्रति शंकालु बनाकर पति-पत्नी के बीच गाली-गलौच और मारपीट की अशोभनीय एवं निंदनीय दुखद स्थिति को जन्म देती है। स्त्री और पुरुष समाज के अनिवार्य अंग है। प्रेम और यौन की भावना उनमें युगों से चली आ रही है। वे दोनों स्वतंत्र तथा अपनी इच्छा के अनुसार चलते हैं। नाटक का नायक अजय कांता के साथ सिर्फ इसी कारण रहता है, क्योंकि वह केवल अपनी कामपूर्ति करना चाहता है। उसके मन में कांता के प्रति व कांता की अजय के प्रति कोई प्रेम भावना नहीं है। उदाहरण-

कान्ता-तुम्हारे लिए न कोई मूल्य है, न मान्यता, न परम्परा, न कोई जिम्मेदारी। तुम सिर्फ सुविधा से जीना चाहते हैं। सुविधा से औरत, सुविधा से शराब। यही है तुम्हारे जीने का असली मकसद। तुम्हारा विश्वास

www.ignited.in

अजय : तुम्हें भी तो एक पुरुष चाहिए। वो पुरुष चाहे कोई भी हो।4

इससे पता चलता है आज प्रेम की परिभाषा की बदल गई है। आज प्रेम दो आत्माओं का भावनात्मक सम्बन्ध नहीं माना जाता, अपितु ये दो शरीरों के मिलन का सम्बन्ध हो गया है। जिसके कारण पति-पत्नी से दूर प्यार तलाशने की कोशिश करता है और आपसी दूरियाँ बढ़ती जाती हैं।

डॉ. नीलम गोयल - "प्रेम का परम्परागत आदर्शवादी और एकनिष्ठ स्वरूप विलुप्त होता जा रहा है, क्योंकि आज प्रेम भावनात्मक और रागात्मक वृत्ति नहीं रहा है। प्रेमी लोग हृदय की अपेक्षा मस्तिष्क से प्रेम करने लगे हैं, क्योंकि आधुनिक युग में सोच-समझकर 'वैयक्तिक हित' को दृष्टि में रखकर प्रेम किया जाता है। जीवन के संघर्षों में उलझनों में प्रेम की स्थिरता और गंभीरता व परिपक्ता खत्म होती जा रही है। प्रेमी लोग अर्थ और काम की आवश्यकता से प्रेरित होकर प्रेम सम्बन्ध स्थापित करते हैं। स्वार्थ पूरा होने पर या पूरा न होने की संभावना में प्रेम से आंखें चुरा लेते हैं।"5 पति और पत्नी का सम्बन्ध कोमल होता है। यह सम्बन्ध टिका होता है पारस्परिक विश्वास की नींव पर। पति-पत्नी में परस्पर अधिकार एवं कत्तव्य की भावना इसमें संतुलन बनाए रखना का कार्य करती है, तो वैवाहिक जीवन सुखी एवं समृद्ध बना रह सकता है अन्यथा नहीं। दाम्पत्य संबंधों में तनाव और विघटन आज के युग की प्रमुख समस्या है। आज पति-पत्नी का परम्परागत व आदर्शवादी रूप देखने को नहीं मिलता। आज पति-पत्नी दो विभिन्न इकाइयाँ बनकर अपने-अपने हित में खोकर अपनी व्यक्तिगत खुशियाँ को पूरा करने की कोशिश में एक दूसरे को कुंठित करते हैं।6

अजय : दरअसल यह दिक्कत औरत की इस मांग से शुरू होती है कि वह बराबरी चाहती है। भला बताओ, औरत और आदमी कभी बराबर हो सकते हैं।7

आदमी कभी यह नहीं चाहता कि औरत उसकी बराबरी करे, अगर वह अपना हक माँगती है तो उसे यह अपने शान के खिलाफ लगता है। उसकी यह अहं की भावना ही है जो एक छत के नीचे रहते हुए भी अलग-अलग जीवन जीते हैं। और इसका बुरा प्रभाव बच्चों पर भी पड़ता है, बच्चे भी माँ-बाप से दूर होते जाते हैं।

डॉ. ज्ञानावती अरोड़ा, पारिवारिक विघटन के परिणामों को स्पष्ट करती हुई लिखती है कि "पति-पत्नी के संबंधों में तनाव, सन्तान के प्रति व्यवहार में स्नेह का अभाव, जिससे बालकों का स्वस्थ विकास रुक जाता है। वैयक्तिक स्वार्थों में वृद्धि और परिवार से ऊब कर सदस्य अलग जा सकते हैं। निकटतम संबंधों को भी तिलांजलि दे दी जाती है।"8

यौन सम्बन्धों की असंतुष्टि भी पति-पत्नी के बीच दूरी का कारण बन जाती है। चारित्रिक दृढ़ता के अभाव के कारण पति-पत्नी सम्बन्धों में संघर्ष उत्पन्न होता है। कभी-कभी शारीरिक या मानसिक कारणों से जब एक-दूसरे की यौन इच्छा की संतुष्टि नहीं कर पति तब भी तनाव उत्पन्न होते हैं।

कान्ता : अजय औरत तो मैं हूँ, बनूं कैसे? तुम्हें औरत के नाम पर खूबसूरत शरीर चाहिए, वो इसके पास है, मैं तुम्हें वो बीस साल पहले दे चुकी हूँ। मैं बीस साल पहले की दुनिया में कैसे लौट सकती हूँ?9

पति या पत्नी के मन में किसी भी बात को लेकर जब अस्थिरता आ जाती है तो वे एक-दूसरे के साथ सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाते। पति-पत्नी के बीच मानसिक अंतराल, रुचियों का अन्तर ही अलगाव का कारण है।

महेन्द्र जैन ने लिखा है कि "अनमेल विवाह, पति-पत्नी में वैचारिकता का अभाव, अवैध प्रेम, सम्बन्ध, निष्ठा का अभाव, पारस्परिक अविश्वास, पुराने और नये विचारों का संघर्ष आदि कुछ ऐसे कारण है जिनसे दाम्पत्य जीवन में असंगति उत्पन्न होती है। अन्ततः दाम्पत्य संबंधों में कटुता एवं दुःख उत्पन्न होता है।"10

साथ रहते हुए भी आज आदमी अपने आपको अकेला महसूस करता है, उसे लगता है कि कोई उसे समझने वाला नहीं है वह जिंदगी के प्रति उदासीन हो जाता है, यही स्थिति अजय की है-

अजय : "मैं क्या करूँ? किससे कहूँ अपने मन की पीड़ा? कोई भी तो नहीं जानता। जानने की कोशिश भी नहीं करता। मैं जानवर नहीं हूँ। मुझे अपनापन चाहिए।"11

"पति-पत्नी एक घर में रहते हुए भी क्यों एक-दूसरे से अजनबी बन जाते हैं? पत्नी घर में सुख सुविधा की समग्र सामग्री, धन, संतान, प्रतिष्ठा आदि से भरपूर होकर भी उदास, दुःख, परेशानी क्यों रहती है? पुरुष नौकरी, घर, सम्पत्ति, पत्नी से भरे घर छोड़कर क्यों सुरा और वेश्याओं से अपने आपको तृप्त करने दौड़ता है मित्र संबंधी क्यों इतने चरित्रहीन हो गये हैं कि घर में किशोरियों का जीवन दूभर हो गया है।"12

आज पति-पत्नी के सम्बन्ध एक अजीब कशमकश, घुटन, अलगाव, दिशाहीनता, ईर्ष्या और कलह के दौर से गुजर रहे हैं। आज का दाम्पत्य जीवन सुखद मालूम नहीं पड़ता। आज के दाम्पत्य जीवन में संतुलन की अपेक्षा असंतुलन अधिक है।

www.ignited.in

प्रमुख समाजशास्त्री मोतीलाल मानते हैं कि "संगठित परिवार में पति-पत्नी अपनी यौन-इच्छाओं की पूर्ति एक दूसरे से ही करते हैं, जब परिवार के दायरे में यौन इच्छाओं की पूर्ति नहीं होती तो संदेह, तनाव व संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है और पारिवारिक विघटन शुरू हो जाता है। स्पष्टत: यौन इच्छाओं की पूर्ति परिवार के बाहर करना पारिवारिक विघटन को निमंत्रण देना है।"13

पति-पत्नी आत्मसुख को अधिक महत्त्व देने लगे हैं। परिवार के टूटने का यही मुख्य कारण है। प्रेम, त्याग और उत्सर्ग जो परिवार को टूटने से बचाते थे वे अब केवल शब्दमात्र ही रह गये हैं।

दाम्पत्यगत दूरियों, अपूर्णता, रिक्तताबोध और एकाकीपन के दंश ने अनेक वैवाहिक सम्बन्धों को खोखला सिद्ध कर दिया है और दम्पत्ति चुपचाप इस विष को जीने के लिए पी रहे हैं और पीये जा रहे हैं।

संदर्भ सूची :

1. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में गृहपरिवार, यशवंत के गोस्वामी, नया साहित्य केन्द्र, सोनिया विहार, दिल्ली-24, प्रथम संस्करण 2005

2. शम्भूरत्न त्रिपाठी, समाजशास्त्र के मूलाधार, किताब घर परेड, कानपुर, 1971

3. डॉ. भगवानदास वर्मा, कहानी की संवेदनशीलता सिद्धान्त और प्रयोग, 1972

4. प्रताप सहगल, नहीं कोई अंत, किताब घर प्रकाशन, 24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1998

5. डॉ. नीलम, स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी लेखिकाओं के उपन्यासों में अलगाव, गुरुनानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर, प्रथम संस्करण 1987

6. प्रोमिला कपूर, भारत में विवाह और कामकाजी महिलाएँ, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, सं. 1976

7. प्रताप सहगल, नहीं कोई अंत, किताब घर प्रकाशन, 24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1998

8. डॉ. ज्ञानावती अरोड़ा, समसामयिक हिन्दी कहानी में बदलते पारिवारिक संबंध, सूर्य प्रकाशन, नई सडक़, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1984

9. प्रताप सहगल, नहीं कोई अंत, किताब घर प्रकाशन, 24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1998

10. महेन्द्र जैन, हिन्दी उपन्यासों में पारिवारिक चित्रण, पृ. 106

11. प्रताप सहगल, नहीं कोई अंत, किताब घर प्रकाशन, 24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1998

12. डॉ. दशरथ ओझा, आज का हिन्दी नाटक : प्रगति और प्रभाव, राजपाल एंड संस, दिल्ली, सं. 1984

13. डॉ. मोतीलाल गुप्ता, भारतीय सामाजिक संस्थाएँ, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ. 401

Corresponding Author

Jai Bhagwan*

Research Scholar, PhD in Hindi, OPJS University, Churu, Rajasthan